तिलका आंदोलन – (1784-85)

राजमहल क्षेत्र में तिलका माँझी के नेतृत्व में संथालों द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध, पहड़िया जनजाति के प्रति अंग्रेजों की पक्षधरता के कारण हुआ। पहाड़ियां से कर न लिये जाने से संथालों में रोष था। पहाड़िया की सहायता से अंग्रेजों ने विद्रोह को दबा दिया।

चेरो विद्रोह – (1800-1819)

कंपनी की सरकार का बकाया कर ना चुका पाने के कारण पलामू के चेरो शासक चूड़ामन राय के राज्य को नीलाम कर दिया गया। 1815 में इसे घनश्याम सिंह को बेच दिया गया। इससे चेरों के आत्मसम्मान को ठेस पहुँची उन्होंने 1817 में रामबख्श सिंह के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। विद्रोह का दमन कर 1819 ई० में कंपनी शासन द्वारा पलामू को अपने प्रत्यक्ष अधिकार में ले लिया गया।

कोल विद्रोह – (1831-32)

यह मुख्य रूप से मुंडा आदिवासियों द्वारा किया गया जिसमें 'हो' आदिवासी भी सहायक थे। इस विद्रोह का मुख्य कारण बढ़े हुए दर से लगान ना चुका पाने के कारण आदिवासी किसानों की जमीनें छीनकर बाहरी लोगों को सौंपना था। इस विद्रोह का मुख्य नेता 'बुद्धो भगत' था।

संथाल विद्रोह – (1855-56)

भागलपुर तथा राजमहल के क्षेत्र में। यह विद्रोह शासन की नयी भू राजस्व व्यवस्था तथा सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों व साहूकारों के विरुद्ध था। इसके नेता सिद्धू, कान्हू, चाँद व भैरव थे।